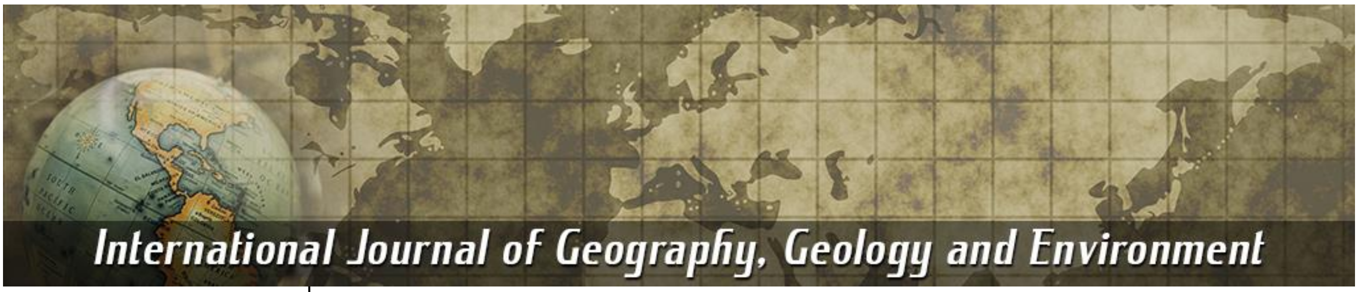

P-ISSN: 2706-7483
E-ISSN: 2706-7491
IJGGE 2020; 2(2): 52-56
Received: 14-05-2020
Accepted: 18-06-2020

विशाल चौधरी
पी0एचडी0 शोधार्थी;भूगोल विभागद्ध के. आर.(पी.जी.) कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत ।

Corresponding Author:
विशाल चौधरी
पी0एचडी0 शोधार्थी;भूगोल विभागद्ध के. आर.(पी.जी.) कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत ।

मथुरा तेल शोधनशाला का उद्योग धन्धों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान

विशाल चौधरी

सारांश
उ0प्र0 राज्य के जनपद मथुरा में उद्योगों के विकास तथा ग्रामीण विकास में परिवहन के साधनों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि औद्योगिक जीवन संचार की जिम्मेदारी परिवहन के साथ ही निभाते हैं। उद्योगों का परिवहन के साथ परस्पर तथा प्रत्यक्ष सम्बन्ध है, जिसमें परिवहन के संसाधनों में सड़क, रेल, वायु यातायात के प्रमुख साधन हैं। इनके अभाव में उद्योगों के विकास की कल्पना करना निरर्थक है। किसी भी क्षेत्र के संसाधनों का उपयोग परिवहन के विकास पर निर्भर करता है।

प्रस्तावना
मथुरा जनपद में 4 तहसील पाई जाती हैं तथा मथुरा रिफाइनरी एवं ग्रामीण विकास सम्बन्धी शोध अध्ययन के आधार पर लिखा है कि मथुरा रिफाइनरी की वजह से अनेक उद्योग धन्धों के विकास को महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। इस रिफाइनरी की वजह से अनेक मजदूर बाहर से आते हैं जिससे उद्योगों के लिये मजदूर आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं तथा मथुरा रिफाइनरी की वजह से गैस, डीजल, पेट्रोल आपूर्ति, बिजली आपूर्ति, जल आपूर्ति सहायक उद्योगों के विकास इत्यादि सम्भव हो सके हैं। इसके अन्य लाभों में ग्रामीण अंचलों में डामरीकृत रोड्स तथा लिंक रोड्स का नक्शा भी शोधार्थी इनके चिन्हित कर उनके विकास की रूप रेखा प्रस्तुत करना है।

अध्ययन का उद्देश्य –
प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र मथुरा रिफाइनरी का सहायक उद्योग धन्धों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान पर पड़ता प्रभाव का अध्ययन करना है ताकि अध्ययन के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में रिफाइनरी से उद्योग धन्धों के विकास पर क्या–क्या प्रभाव दृष्टिगत होते हैं। उनके सही स्थिति का पता लगाना तथा उद्योगों के विकास में आने वाली समस्याओं की स्थिति का सही से पता लगाना व उनका निराकरण करना।

विधि तंत्र –
प्रस्तुत अध्ययन में अवलोकनात्मक अनुक्रियात्मक एवं विश्लेष्णात्मक विधितंत्रों का प्रयोग करते हुए द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण का निष्कर्ष प्राप्त किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र –
मथुरा तहसील में 10 विकास खण्ड तथा 89 न्याय पंचायत एसं 479 ग्राम सभाऐं हैं। 887 ग्रामों की संख्या है। जनपद मथुरा वह पावन स्थली है जहां कर्मयोगी भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। मथुरा जनपद उ0प्र0 की पश्चिमी सीमा पर यमुना नदी के तटीय भाग में स्थित है। इसके पूर्व में जनपद महामाया नगर, उत्तर में अलीगढ़ जनपद, द0पू0 में जनपद आगरा, द0प0 में राजस्थान प0उ0 में हरियाणा जनपद का अशासीय विस्तार 27014′ तथा 27057′ एवं देशान्तरीय विस्तार 77017′ से 78012′ के मध्य स्थित है। जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 38.11 वर्ग किमी0 है। कुल जनसंख्या 1931186 है।

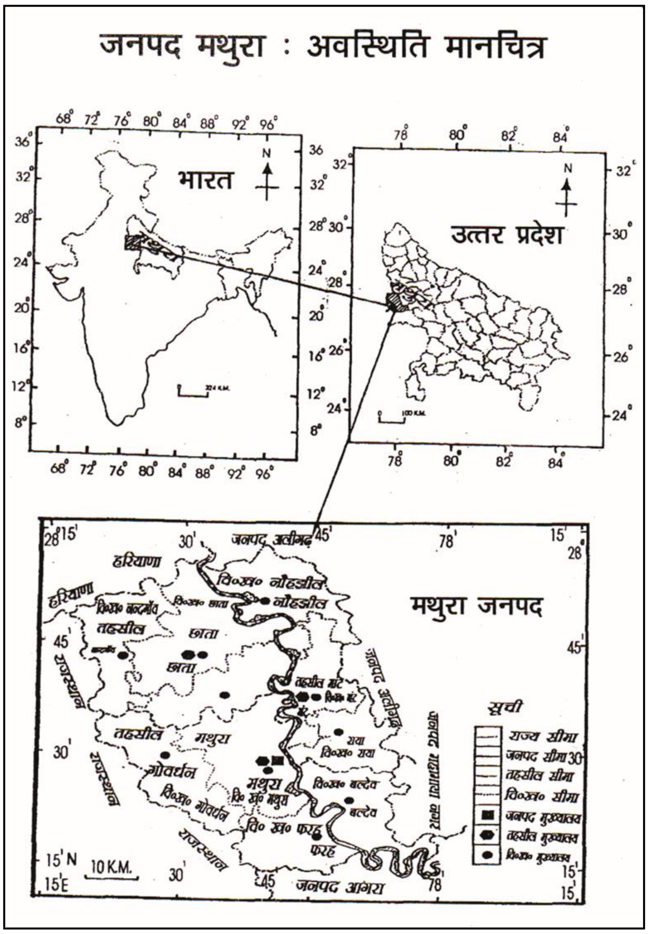

व्याख्या –
पर्यावरण की संरक्षा व सुरक्षा हेतु अनेकों प्रकार के कार्यक्रम तथा क्रियाकलाप आयोजित करती है ताकि आम जनता अधिकाधिक लाभान्वित हो सके। उल्लेखनीय है कि मथुरा रिफाइनरी का योगदान विशेषकर सड़क संजाल, विद्युत आपूर्ति, जल आपूर्ति, रोजगार सम्बर्द्धन, पर्यावरणीय संरक्षा एवं सुरक्षा तथा अन्य सहायक उद्योग धन्धों तथा लघु कुटीर उद्योग धन्धों के संदर्भो में स्वीकार किया जा सकता है। मथुरा रिफाइनरी द्वारा पर्यावरणीय सुधार के क्षेत्र में किये जा रहे विशेष प्रयासों को संस्थान के निर्देशक व पर्यावरणविद् एच.पी. हजेला, पर्यावरण संरक्षण शोध संस्थान हैदराबाद ने अपने शोध ग्रन्थ–2011 में किया है।

सहायक उद्योग धन्धों में मथुरा तेल शोधनशाला का योगदान–
मथुा तेल शोधनशाला की बजह से जनपद में विभिन्न प्रकार के सहायक तथा लघु कुटीर उद्योग धन्धों का भी विकास हुआ है। जिसका सघन क्लस्टर एरिया कोसी, कोटबन तथा छाता है जो ताज ट्रिपेजियम क्षेत्र से बाहर आता है इनमें गिन्नी फिलामेन्ट, शामकेन स्पिनर्स, पशुपति फैब्रिक्स, शामकेन मल्टीफैब सूती यार्न एण्ड फैब्रिक्स इकाईयाँ हैं। डेरी उत्पाद एवं मिल्क पाउडर की तीन इकाईयाँ तथा दो इकाईयाँ सुगर एवं कैमिकल मशीनरी प्लान्ट तथा एक चीनी मिल भी है। चार दशक पूर्व स्थापित हुई इस मथुरा रिफाइनरी में पैट्रोल, डीजल, कैरोसिन, बिटुमिन, तारकोल, ऐविएशन टरबाइन फ्यूल, एल.पी.जी., हाईस्पीड डीजल, मोटर स्प्रिट, सुपर कैरोसिन, फरनेस ऑयल आदि का उत्पादन भारी मात्रा में होता है जिन्हें देशभर में टैंकरों तथा रेल मार्गो से भेजा जाता है। उल्लेखनीय है कि आज पैट्रोलियम पदार्थो विशेषकर फ्यूल गैस की माँग उत्तरोत्तर बढ़ रही ह, सम्प्रति विभिन्न प्रकार के सहायक उद्योग धन्धे तथा व्यवसाय स्थापित हो रहे हैं जिसमें सूती धागे, साड़ी उद्योग, कालीन व दरी उद्योग तथा रंगाई छपाई उद्योग विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिससे रोजगारों के अवसर बढ़े हैं तथा निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं जिससे आर्थिक सामाजिक संदर्भो में जिला की कायापलट हो रही है। अनुसंधित्सु ने इस सम्बन्ध में भी जानकारी करने के लिये अध्ययनार्थ चयनित कुल 50 सूचनादाताओं से साक्षात्कार करते हुए प्रश्न पूछा कि 'मथुरा रिफाइनरी की बजह से सहायक उद्योग धन्धे तथा पूरक व्यवसाय स्थापित हुए हैं?' सर्वेक्षण अध्ययन तथा व्यक्तिगत साक्षात्कारों से प्राप्त तथ्यों (जानकारी) पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका – मथुरा तेल शोधनशाला एवं सहायक उद्योग– सूचनादाताओं के अभिमत

क्रम	रिफाइनरी की बजह से	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1	मध्यम तथा लघु सहायक उद्योग धन्धे स्थापित हुए हैं।	43	86.00
2	सहायक उद्योग धन्धे स्थापित नहीं हुए हैं।	–	00.00
3	सूचनादाता अनुत्तरित रहे (कहा कह नहीं सकते)	07	14.00
	समस्त योग	50	100.00

प्रसंगाधीन तालिका अध्ययन किये गये कुल 50 सूचनादाताओं से प्राप्त प्राथमिक तथ्यों के विश्लेषण के प्रकाश में स्पष्ट है कि 86 प्रतिशत सूचनादाताओं के अनुसार मथुरा रिफाइनरी की बजह से जिलान्तर्गत विभिन्न प्रकार के सहयोग मध्यम तथा लघु सहायक उद्योग धन्धे स्थापित हुए हैं

जिससे–

1. बेरोजगारी पर कुछ अंकुश लगा है।
2. ग्रामीण नगरीय प्रवास कम हुआ है।
3. जिला के निवासियों की आर्थिक सामाजिक दशाऐं सुधरी हैं।
4. रोजगारों के नए–नए अवसर सुलभ हुए हैं। आदि

अनुसंधित्सु ने यह भी जानकारी हॉसिल करने का प्रयास किया है कि 'मथुरा रिफाइनरी की बजह से सहायक उद्योगों का विकास आकस्मिक हुआ है या शनैः शनैः?' तो सर्वेक्षित सूचनादाताओं ने बताया कि जिला का विकास जिला में रिफाइनरी की स्थापना के पश्चात् से शनैः शनै हो रहा है; आकस्मिक विकास नहीं हुआ है। इस तथ्य की सत्यता एवं सार्थकता परखने के लिये अनुसंधित्सु ने साँख्यकीय परीक्षण 'आकस्मिकता गुणाँक (फ़) का परिकलन' किया है' जिस पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है।

तालिका – आकस्मिकता/असंगत गुणांक (फ) का परिकलन

क्रम	सहायक उद्योगों का विकास (सूचनादाताओं के प्रत्युत्तर/अभमत)	सूचनादाताओं की आवृत्तियाँ		समस्त
		हाँ	नहीं	
1	आकस्मिक हुआ है	35 ।	05 ठ	40
2	श्शनैः शनैः हुआ है	08 ब	02 क	10
	समस्त योग	43	07	50

सूत्र : असंगत/आकस्मिकता गुणांक

$$(Q) = \frac{AD - BC}{AD + BC} = \frac{35\,X\,2 - 5\,X\,8}{35\,X\,2 + 5\,X\,8} = \frac{70\ - 40}{70 +\ 40}$$

$$= \frac{30}{110} = (+)\ 0.27$$ **(धनात्मक मान)**

चूँकि अध्ययन किये गये कुल 50 सूचनादाताओं से प्राप्त प्राथमिक तथ्यों से असंगत/आकस्तिकता गुणाँक (फ) का प्रयोगात्मक मान (+)0.27 प्राप्त हुआ है जो आकस्मिकता गुणाँक के प्रामाणिक तालिका मान (+)1 के मध्य है तथा काफी कम है; अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मथुरा रिफाइनरी की स्थापना के पश्चात् से सम्बन्धित उद्योगों तथा सहायक उद्योग धन्धों का विकास शनैः शनैः हुआ है जिनका जनपद के निवासियों की आर्थिक सामाजिक दशाओं पर सकारात्मक तथा प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है।

अन्य योगदान –

मथुरा रिफाइनरी की बजह से डीजल व पेट्रोल पम्प्स, मिट्टी का तेल, सी. एन.जी. पम्प्स, ग्रामीण कुटीर उद्योगों में मुर्गी पालन, सूअर पालन, मधुमक्खी पालन, डेरी, कताई, बुनाई, रंगाई, साड़ी उद्योग, आटा चक्की, स्पेलर, रस्सी बनाना, निबाड़ उद्योग, हथकरघा उद्योग, मिट्टी के खिलौने व बर्तन बनाना, लकड़ी का फर्नीचर बनाना, कपड़ों पर कढ़ाई, तेलधानी उद्योग, जूते बनाना व मरम्मत, दरी व गलीचा उद्योग, आरा मशीन व लकड़ी की टर्निंग, कागज उद्योग, प्रिंटिंग प्रेस, पत्थर पर नक्कासी, फ्लोर मिल, बेकरी उद्योग, आइस केण्डी, आयरन फाउन्ड्री, ऑफसेट वर्क्स, दाल व राइस उद्योग, राइस मिल्स, कोल्ड स्टोरेज, आलू चिप्स, ऑयल मिल्स इत्यादि उद्योग धन्धे मथुरा तेल शोधनशाला के विशेष योगदान हैं। ग्रामीण क्षेत्रान्तर्गत मथुरा तेल शोधनशाला के अन्य योगदानों के अन्तर्गत सीमेन्ट जाली व इण्टरलॉकिंग ईंट उद्योग, सीमेन्ट कंकरीट ईंट उद्योग, लकड़ी टाल व टर्निंग तथा लकड़ी फर्नीचर उद्योग, मिट्टी के बर्तन व खिलौना बनाना, सूअर पालन, कुक्कुट पालन, मधुमक्खी पालन, दुग्ध (डेरी) उद्योग, मसाला पिसाई व आटा चक्की, स्पेलर व तेलधानी, कताई, बुनाई, रंगाई उद्योग, प्रिंटिंग प्रेस, बेकरी उद्योग, आइस केण्डी उद्योग, कोल्ड स्टोरेज, ऑफसेट वर्क्स, हथकरघा उद्योग, दौना पत्तल बनाना, रस्सी बनाना, पौधशाला व फ्लॉवर उद्योग, धान कुटाई उद्योग, व्हीकल्स के पंचर लगाना तथा हवा भरने के साथ–साथ स्पेयर पार्ट्स की दुकानें, टेलरिंग उद्योग, फ्यूल गैस गोदाम, घरेलू स्तरों पर महिलाओं द्वारा जरी व सिलाई कढ़ाई बुनाई कार्य, कूलर किट्स व पेन्ट उद्योग, मोटर पंखा बाईडिंग वर्क्स, बेकरी वर्क्स आदि ग्रामीण अंचलों के अन्य उद्योग धन्धे हैं जो रिफाइनरी स्थापित हो जाने की बजह से पनपे हैं। ऐसा अध्ययनार्थ चुने गये सूचनादाताओं ने बताया है। अन्त में अध्ययनकर्ता ने मथुरा रिफाइनरी के मुख्य योगदानों के संदर्भ में सभी 50 सूचनादाताओं से प्रश्न किया तो निम्न तथ्य प्रकाश में आये जिस पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

जनपद मथुरा – उद्योग धन्धे

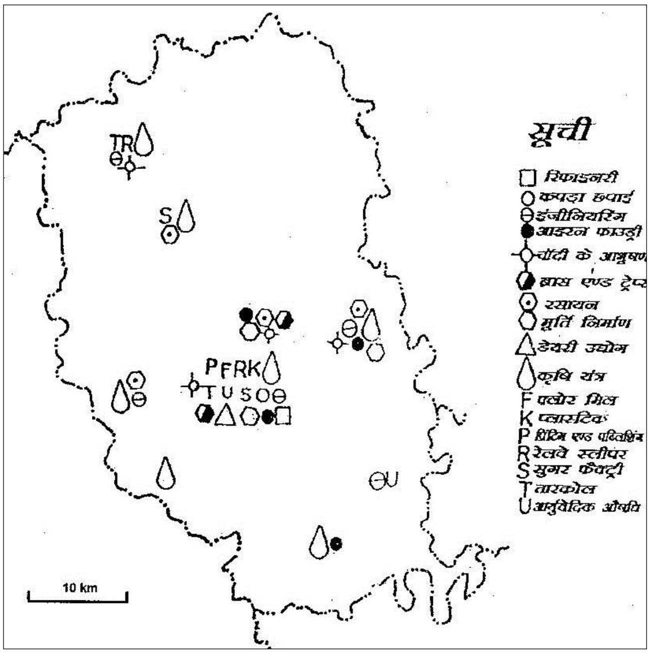

तलिका : मथुरा रिफाइनरी के मुख्य योगदानों के सम्बन्ध में सूचनादाताओं के प्रत्युत्तर/अभिमत

क्रम	तेल शोधनशाला मथुरा से जनपद को योगदान	सूचनादाताओं के प्रत्युत्तर (अभिमत)/स्वीकारोक्तियाँ				योग (प्रतिशत)
		पक्ष में	विपक्ष में	उदासीन	अनुत्तरित रहे	
1	विद्युत व जल आपूर्ति में सुधार होना	45(90.00)	--(00.00)	02(04.00)	03(06.00)	50(100.00)
2	विभिन्न उद्योग धन्धों व सहायक लघु उद्योगों का सम्बर्द्धन एवं रोजगार सृजन में वृद्धि होना	41(82.00)	--(00.00)	08(16.00)	01(02.00)	50(100.00)
3	सड़क संजाल व यातायात संसाधनों में वृद्धि होना	48(96.00)	--(00.00)	02(04.00)	--(00.00)	50(100.00)
4	चिकित्सा व स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि व पर्यावरण सुधार होना	39(78.00)	01(02.00)	06(12.00)	04(08.00)	50(100.00)
5	शिक्षा क्षेत्र में वृद्धि (शैक्षिक जागरूकता में वृद्धि)	37(74.00)	--(00.00)	11(22.00)	02(04.00)	50(100.00)
6	ग्रामीण – नगरीय प्रवसन में कमी (रोक) आना	40(80.00)	03(06.00)	05(10.00)	02(04.00)	50(100.00)

7	आर्थिक–सामाजिक विकास में वृद्धि आदि	35(70.00)	05(10.00)	10(20.00)	..(00.00)	50(100.00)

(नोट– कोष्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्शित आँकड़े प्रतिशतला दर्शाते हैं)

प्रसंगाधीन तालिका के प्राथमिक आँकड़ों के विश्लेषण तथा विवेचन के प्रकाश में स्पष्ट होता है कि मथुरा रिफाइनरी के योगदानों के सम्बन्ध में अध्ययनार्थ चयनित सभी 50 सूचनादाताओं के अभिमतों/स्वीकारोक्तियों के अनुसार–

1. 90 प्रतिशत सूचनादाताओं ने यह स्वीकार किया है कि मथुरा रिफाइनरी की बजह से जिलान्तर्गत विद्युत आपूर्ति में सुधार हुआ है साथ ही साथ जल आपूर्ति में भी सुधार हुआ है क्योंकि विद्युत आपूर्ति पर ही प्रकाश, पेयजल तथा कृषि सिंचाई आपूर्ति पूर्णतः निर्भर करती है।
2. 82 प्रतिशत सूचनादाताओं का मत है कि मथुरा रिफाइनरी की बजह से विभिन्न बड़े उद्योगों तथा सहायक उद्योग धन्धों जिसमें लघु कुटीर उद्योग धन्धे भी सम्मिलित हैं; में वृद्धि हुई है, जिससे विभिन्न प्रकार के पूरक रोजगारों के सृजन भी हुए है अर्थात् अप्रत्यक्ष रूप से नए–नए रोजगारों की स्थापनाओं से बेरोजगारों की संख्या में कमी आयी है। रोजगारों की स्थापनाओं के लिये 'स्वतः रोजगार योजनान्तर्गत' जिला उद्योग केन्द्र निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान करता है, और व्यावसायिक राष्ट्रीयकृत बैंकें अनुदानित धनराशियाँ (रू0) प्रदान करती हैं ताकि व्यवसाय, उद्योग तथा तृतीयक क्षेत्र की सेवान्तर्गत भाँति–भाँति के वृहद तथा लघु व कुटीर, उद्योग धन्धे स्थापित किये जा सके हैं। शोधार्थी का सुझाव है कि निर्बल वर्गो को तृतीयक क्षेत्र के रोजगार अधिकाधिक सुलभ कराये जांय ताकि निर्धनता की सीमा रेखा से ऊपर उठ सकें।
3. 96 प्रतिशत सूचनादाताओं ने यह भी स्वीकार किया है कि मथुरा रिफाइनरी की स्थापना के बाद में नगरीय तथा ग्रामीण क्षेत्रान्तर्गत रोड्स व लिंक रोड्स के निर्माण हुए हैं। जिन्हें बड़ी–बड़ी सड़कों (दिल्ली–आगरा फोरलेन, यमुना एक्सप्रेस–वे) से जोड़ा गया है जिससे यातायात तथा यातायात के संसाधनों में काफी वृद्धि है अर्थात् मथुरा रिफाइनरी का 'सड़क संजाल' में एक बड़ा योगदान है। शोधार्थी का सुझाव है कि ग्रामीण दूरस्थ अंचलों में भी पक्की सड़कें बनवाई जांय ताकि दूरस्थ गाँवों का भी विकास सम्भव हो सके।
4. 78 प्रतिशत सूचनादाताओं की मान्यता है कि मथुरा रिफाइनरी की बजह से चिकित्सा व स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि हुई है, साथ ही साथ रिफाइनरी के प्रयासों से पर्यावरण सुधार भी हुआ है। शोधार्थी का सुझाव है कि ग्रामीण दूरस्थ अंचलों में स्वास्थ्य व चिकित्सा संस्थाओं का विकास किया जाये।
5. मथुरा रिफाइनरी ने विशेषतः अपने कर्मचारियों के बालक बालिकाओं की शिक्षा हेतु अपनी आवासीय कॉलौनी में एक केन्द्रीय विद्यालय की स्थापना भी कराई है जो उच्च कोटि की शिक्षा प्रदान कर रही है जिससे निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्रान्तर्गत आम जनता में बच्चों को श्रेष्ठ से श्रेष्ठ शिक्षा दिलाने के प्रति शैक्षिक जागरूकता में वृद्धि हुई है, ऐसा 74 प्रतिशत (तीन चौथाई) सूचनादाताओं ने स्वीकार किया है। रिफाइनरी की स्थापना की बजह से कोसी से लेकर मथुरा रिफाइनरी तक शिक्षण संस्थानों की बाढ़ जैसी आ गयी है अर्थात् मथुरा आज 'एजुकेशन हब' बन गया है क्योंकि यहाँ ऐलोपैथिक, आयुर्वेदिक, होत्यापैथिक मेडीकल कॉलेज, डेन्टल कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज, पॉलीटेक्निक कॉलेज, वैटेरीनरी विश्वविद्यालय, फार्मेसी कॉलेज, जी.एल.ए यूनिवर्सिटी इत्यादि; अन्यान्य शिक्षण संस्थाऐं शिक्षा के क्षेत्र में भॉति–भॉति की शिक्षाऐं प्रदान कर अद्वितीय योगदान दे रहे हैं। शोधार्थी का सुझाव है कि जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षण संस्थाओं की अधिकाधिक स्थापनाऐं की जांय ताकि शैक्षिक स्तर भी ऊँचा हो सके।
6. 80 प्रतिशत सूचनादाताओं की मान्यता है कि रिफाइनरी की बजह से वृहद्, मध्यम तथा लघु कुटीर धन्धों के सम्बर्द्धन के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में रिफाइनरी उत्पादों से सम्बन्धित उद्योग धन्धों की स्थापनाओं से ग्रामीण नगरीय प्रवसन में भी कमी आयी है अर्थात प्रायः निर्धन ग्रामीण लोग अपने लघु कुटीर उद्योग धन्धों तथा पूरक रोजगार संसाधनों व तृतीयक क्षेत्र की सेवाओं द्वारा अपनी आजीविका कमाने में सफल हुए हैं। शोधार्थी का मानना है तथा सुझाव है कि नए रोजगारों की स्थापनाओं के लिये शाधन अनुदानित ऋण प्रदान कर सहयोग करें।
7. 70 प्रतिशत सूचनादाताओं ने स्वीकार किया है कि मथुरा रिफाइनरी की बजह से जिला के निवासियों की आर्थिक तथा सामाजिक दशाऐं सुधरी हैं। इस तथ्य की पुष्टि 'योजना पत्रिका' अर्थ एवं साँख्यकी विभाग, वर्ष 2012 (लखनऊ) द्वारा होती है। इस प्रसंग में अनुसंधित्सु की मान्यता तथा सुझाव है कि मथुरा रिफाइनरी के कारण जनपद के समग्र विकास के सुधार की दिशा में अभी अपार सम्भावनाऐं हैं। सम्प्रति, यह कहा जा सकता है कि जिला मथुरा के विकास में उद्योगों का योगदान (मथुरा तेल शोधनशाला के संदर्भ में) उल्लेखनीय है।

प्रस्तुत तालिका के निष्कर्षो की सत्यता एवं सार्थकता परखने के लिये अनुसंधित्सु ने काई स्क्वायर 12 साँख्यकीय परीक्षण द्वारा परिकलन करके उक्त निष्कर्षो की जाँच स्थापित करने का प्रयास किया है जिस पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है।

तालिका – काई स्क्वायर परीक्षण (ग^2) के परिकलन द्वारा उक्त निष्क∀ाें की सत्यता व सार्थकता का परीक्षण

क्रम	सूचनादाता	सूचनादाताओं की स्वीकारोक्तियाँ		समस्त
		हाँ	नहीं	
1	कार्मिक	20 ˙	05 इ	25
2	आमजन	18 ब	07 क	25
	समस्त योग	8	12	छत्र50

सूत्र : काई स्क्वायर ;ग^{2}द्ध $= \dfrac{(ad-bc)^2 . N}{(a+c)\ (b+d)(c+d)\ (a+b)}$

$$= \frac{(20x7-5x18) . 50}{(20+18)\ (5+7)\ (18+7)\ (20+5)}$$

$$= \frac{(140-90) . 50}{38 \text{ x } 12 \text{ x } 25\ 25}$$

$$= \frac{50 \text{ x } 50}{38 \text{ x } 12 \text{ x } 25\ 25}$$

$$= \frac{1}{114} = (+)\ 0.00877$$ (धनात्मक मान)

चूँकि काई स्क्वायर का गणनात्मक (प्रयोगात्मक) मान, उसके सारिणी (प्रामाणिक) मान (+)1 के मध्य किन्तु अत्यधिक न्यून प्राप्त हुआ है। अतः स्पष्ट है कि मथुरा तेल शोधनशाला; जिला मथुरा के अन्तर्गत विभिन्न उद्योगों के विकास में सकारात्मक भूमिका निभा रही है।

निष्कर्ष

शोधार्थी ने यह पाया है कि जनपद मथुरा में उद्योगों का विकास मथुरा तेल शोधनशाला की बजह से हुआ है लेकिन मथुरा तेल शोधनशाला के अन्तर्गत विभिन्न उद्योगों के विकास में सकारात्मक भूमिका निभा रही है। यह कहा जा सकता है कि कृषि ऐसी दुधारू गाय है जिसका उपयोग औद्योगिक प्रगति के प्रोत्साहन की अपरिहार्यता से सम्बन्ध है। इस प्रकार औद्योगिक विस्तार के बिना कृषि उत्पादन वृद्धि स्वयं में एक गलत धारणा है। मथुरा जनपद जैसी पिछड़ी कृषि आधारित ग्रामीण सामाजिक आर्थिक व्यवस्था एवं जन जीवन में परिवर्तन औद्योगिकीकरण के द्वारा ही किया जा सकता है। मथुरा जनपद को राज्य एवं भारत सरकार द्वारा औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए जनपदों की श्रेणी में रखा गया है। जब उद्योग ही पिछड़े होंगे तो वहाँ के मानव जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। इसलिये मथुरा जनपद के अन्तर्गत उद्योगों के पिछड़ेपन की दृष्टि में रखकर सरकार एवं जिला प्रशासन द्वारा उद्योगक केन्द्र, मथुरा के देखरेख में उद्योगों के विकास के लिये योजना तैयार की जाये, जिससे जनपद मथुरा में उद्योगों का विकास किया जा सके जिससे लोगों का जीवन स्तर ऊँचा उठ सके तथा जो लोग रोजगार की तलाश में पलायन कर रहे हैं उन लोगों के पलायन को रोका जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ए.पी. आर्या जनसंचार साधन एवं ग्रामीण विकास, मैनपुरी जिला का एक प्रतीक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, डॉ. बी.आर.ए.वि.वि., आगरा।, 1996
2. महाजन कमलेश चन्द्र ग्रामीण भारत में विकास के विभिन्न आयामः जनपद बरेली का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, महात्मा ज्योतिबा फुले, रूहेलखण्ड वि.वि. बरेली (उ0प्र0), पृष्ठ 205, 2003
3. महेश नारायण व भावना माथुर संसाधन भूगोल, बसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर (उ0प्र0), पृष्ठ 380–381, 1999
4. जिला गजेटियर, मथुरा, 1980
5. प्रेमचन्द्र गुप्ता जन संसाधन एवं विकासः एक सर्वेक्षण अध्ययन, प्रकाशित राष्ट्रीय शोध जर्नल, पृष्ठ 47–51, 2011
6. रूहेला सतीशचन्द्र यातायात के साधन एवं क्षेत्रीय विकास; प्रकाशित शोध प्रपत्र, 'सामाजिक सहयोग' राष्ट्रीय शोध पत्रिका, श्रीकृष्ण शोध संस्थान, उज्जैन (म0प्र0), पृष्ठांकन 57–63, 2013
7. हंसराज वैद्य व्यावहारिक अर्थशास्त्र; विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, पृष्ठांकन–281, 2014
8. प्रो0 (श्रीमती) सुनीता वर्मा मथुरा रिफाइनरी एवं ग्रामीण विकास, जनपद मथुरा की तहसील छाता के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन, जी.एल.ए., यूनिवर्सिटी मथुरा, प्रोजेक्ट रिपोर्टः एम.ए. भूगोल (अप्रकाशित), पृष्ठ 78–79, 2014
9. सिंह रामेश्वर मथुरा तेल शोधनशाला के विशेष संदर्भ में एक आनुभविक क्षेत्रीय अध्ययन; प्रकाशित शोध प्रपत्र, 'सामाजिक सहयोग' राष्ट्रीय शोध पत्रिका, श्रीकृष्ण शोध संस्थान, उज्जैन (म0प्र0), पृष्ठ 82–89, 2014
10. हजेला एच.पी. मथुरा रिफाइनरी एण्ड ऐनवाइरनमेण्टल पॉलुशनः ए केस स्टडी, पर्यावरण संरक्षण शोध संस्थान, हैदराबाद, पृष्ठ 224–225, 2011
11. .... योजना पत्रिका, अर्थ एवं सॉख्यकी विभाग, लखनऊ (उ0प्र0) शासन, पृष्ठांकन–31, 2012